प्रतिभा राय की कहानियों में संवेदना के विभिन्न के आयाम

डॉ.संजय निमावत

विभाग अध्यक्ष, हिन्दी विभाग

ईमेल- smnimavat2011@gmail.com

श्रीमती पी.एन.आर. शाह महिला आर्ट्स एवं कॉमर्स कॉलेज, पालिताणा (गुजरात)

ओडिया भाषा की प्रख्यात लेखिका है प्रतिभा राय | उन्हें वर्ष 2011 के लिए 47वें ज्ञानपीठ पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। प्रतिभा राय के अब तक 20 उपन्यास, 24 लघुकथा संग्रह, 10 यात्रा वृत्तांत, दो कविता संग्रह और कई निबंध प्रकाशित हो चुके हैं। उनकी प्रमुख रचनाओं का देश की प्रमुख भारतीय भाषाओं व अंग्रेजी समेत दूसरी विदेशी भाषाओं में अनुवाद हुआ है। उनके प्रसिद्द उपन्यास शिलापद्म का हिन्दी में कोणार्क के नाम से और याज्ञसेनी का द्रौपदी के नाम से अनुवाद हुआ है जो हिन्दी में काफ़ी पढ़े जाने वाले उपन्यासों में से हैं।उनके अब तक चौबीस लघु कहानी संग्रह प्रकाशित हो चुके है । प्रतिभा राय की कहानियों पढ़ते हुए हम पाते है कि पिछले चार दशको में दलितों की, स्त्रियों की एवं आम आदमी की बदतरस्थिति में कोई बड़ा फर्क नहीं पड़ा | लोगों की मानसिकता में, उनकी मानवीयता में और इनकी , नीतिमत्ता की भावनाओं में कोई अधिक सुधार नहीं हुआ है|

प्रतिभा राय की कहनियाँ पिछले तीन-चार दशकों में लिखी गई एवं प्रासंगिक एवं ह्रदय-स्पर्शी होने से हिंदी में अनुदित होकर आई | हिंदी कहानी साहित्य के इतिहास में एक हिस्सा अन्य भारतीय भाषाओँ से अनुदित होकर आयीं उत्तम कहानियों का होता है | इस रूप में मुझे लगा कि यह भी आलेख का हिस्सा बन सकता है | इसी सोच से मैंने प्रतिभा राय की कहानियों पर लिखना उचीत समझा | वह उड़िया भाषा की ऐसी कथा-लेखिका हैं जिन्हें ज्ञानपीठ पुरस्कार मिला है | यहाँ उनकी स्वयं की चयनित कहानियों में से कुछ कहानियों पर बात करना अभिप्रेत है | 'मेरी प्रिय कहनियाँ' इस कहानी संग्रह की ज्यादातर कहानियों की पृष्ठभूमि स्वधिनोत्तर सभ्यता के प्रभाव से बदलता हुआ ग्रामीण जीवन है | शहर और आधुनिक जीवन से सम्बन्धित कहानियाँ भी हैं लेकिन ज्यादातर कहानियों की परिधि उड़ीसा तथा भारतीय गाँव की शहरीकरण प्रक्रिया का पहला पर्याय है | संस्कृति, प्रेम, इश्वर, विश्वास, बड़ों का सम्मान और कर्तव्य, प्रेम तथा रिश्तों की जटिलता जो सभ्यता के दृश्यांतर के समय दिखाई दिया है, उसी पृष्ठभूमि में मनुष्यता की खोज इन कहानियों की अभीप्सा है | नवीन और पारंपरिक मूल्यबोध के परस्पर संघर्ष से उपजी आतंरिक अनुभूति ने इन कहानियों को एक नए रूप में ढाला है |

" लेखिका के रूप में 'मोक्ष' कहानी के बारे में इतना कहूँगी कि यह रक्षणशील प्रथा के विरुध्ध प्रतिवाद की एक आवाज है | ऐसी कितनी ही अमानवीय प्रथाएँ, दुःख, यंत्रणा और अंतर्दाह ने मनुष्य जीवन के सहज प्रवाह में अवरोध उत्पन्न किया है | ऐसे कितने ही निष्पाप जीवन सामाजिक प्रथा के चलते बलि चढ़े है | सामाजिक प्रथा के आगे रिश्तों का कोई मोल नहीं होता है | मनुष्य ह्रदय के आवेग सामाजिक प्रथा की प्रताड़ना के सामने पानी के बुलबुले की तरह फट जाते हैं, फिर भी इन्सान प्रथा को कसकर पकड़े सब कुछ झेलते हुए अंत में दम तोड़ता है | 'मोक्ष' कहानी मेरी आँखों देखी घटना है | इन्हीं दो मुख्य चरित्रों को देखकर मैं बड़ी हुई हूँ और इस नासमझ रिश्ते के रहस्य को पीछे छोड़कर शहर चली आई थी | इस बीच तीस साल बीत चुके थे लेकिन ये दो चरित्र मेरी लेखकीय सत्ता को कसकर पकडे हुए थे | उस नासमझ रिश्ते को पूरी तरह समझ पाई या नहीं, यह कहना मेरे लिए आज भी मुश्किल है लेकिन 'मोक्ष' कहानी उन्हीं प्रश्नों का उत्तर है | प्रतिष्ठित कहानीकार किशोरीचरण दास का 'मोक्ष' कहानी के बारे में कहना है --- शोषी और नूरी दास के सदावस्थान का खामोश लेन-देन इतना व्यंजनात्मक है कि पाठक की कल्पना को उज्जीवित करने लिए काफी है | पाठक के मन में यह सवाल उठ सकता है कि इस कहानी का नाम 'मोक्ष' क्यों रखा गया ? किससे मोक्ष ? पाप न हो तो मोक्ष कैसे होगा ? या ऐसे ही एक निष्फल जीवन का अभिशाप ? शाप ही नूरी दास के जीवन का पापबोध है जिसके मृदंग के ताल में अँगुलियों के पोरों से खून रिसकर वह मुक्ति की कामना करते थे | उसका रहस्य ऐसे ही बिना कहे रह गया जैसे लेखिका भी उस बारे में कुछ कहने के लिए संकोच कर रही है | प्रछन्नता की जय हो ! पाठक जो समझना चाहता है क्या वह उसकी समझ में नहीं आएगा ? " (१)

"एक ही घर में ४५ साल साथ रहे पर कोई सम्बन्ध देखने-छूने का नहीं | शोषी नूरी की बड़ीसाली है मतलब देढसासू है | नूरी उसका घरजवाई है | घर में सिर्फ तीन लोग है –नूरी, शोषी और सतिया | सतिया फिर शहर चला जाता है | नूरी और शोषी में बात करना या चेहरा देखना पाप है | कहानी में नूरी की संवेदनाएं मृदंग में व्यक्त होती है, ताल से सुख-दुःख का पता चलता है और शोषी का उसके काम के अंदाज से | दोनों में कोई संवाद नहीं पर परस्पर के भावों को जान-समझ जाते हैं | "शोषी ने जो बात नहीं कही वह नूरी दास कैसे जान गए ? नूरी दास जो बात नहीं कहते वह शोषी कैसे जान जाती है ? यह किसी को नहीं मालूम | मनुष्य-मनुष्य के बीच जितनी ही बातें अनकही रह जाती हैं पर अनजानी नहीं रहती | जो सोचते हैं केवल मुँह से ही बातें होती है , वे नासमझ हैं | मनुष्य के हाथ पैर भी बोलते बतियाते हैं | (२)

'मोक्ष' शीर्षक का सम्बन्ध शोषी की जिंदगी और मौत से जुडा है | सामाजिक रीत-रीवाजों के कारण कैसे उसकी पूरी जिंदगी शुष्क ही बीत गयी | इसका सुंदर उदहारण है | तो दूसरी ओर नूरी भी शोषी की मृत्यु से उदास होता है | मृदंग पूरी रात बजता है | हाथों की उँगलियों के पोरों से खून रिस-रिसकर

पिघला जा रहा था | मृदंग के ताल पर ग्रामीण जीवन का एक अनोखा वास्तव कहानी में मार्मिक रीति से आया है |

'बाघ' कहानी ग्राम्य-जीवन के परिप्रेक्ष में आकारित हुई है | पात्र है ---अगनी,बीरबर(प्रधान),अगनी की बेटी महुआ और प्रधान की बेटी मीना | न्याय व्यवस्था की सर्वविदित वास्तविकता, करुणापूर्ण विडम्बना का भी कहानी में हृदयस्पर्शी चित्रण है | एक अपराध के लिए प्रधान और अगनी के साथ अलग-अलग न्याय होता है किन्तु लेखिका उस न्याय व्यवस्था की बात शायद नहीं करना चाह रही | उन्होंने तो परिस्थिति, मानव जीवन, व्यक्ति जीवन की परिणति को प्रस्तुत करना चाहा है |

मालिक प्रधान अपने नौकर,चोकीदार की नाबालिग बेटी का बलात्कार करके उसकी हत्या करता है | उसकी नग्न देह का बीभत्स द्रश्य पिता अगनी ने देखा है | बदला लेने की आग में वह प्रधान की युवा बेटी (जिसे वो खुद बेटी के समान मानता है) के साथ वैसा ही करके अपनी बेटी की आत्मा को शांति देना चाहता है | प्रयत्न करता है पर अगनी मौका होते हुए भी वैसा कर नहीं पाता | वह प्रधान की बेटी को गुस्से में पागल होकर मारता है | उसका वह पाशवी रूप मीना पहली बार देख रही है | डर के मारे वह सामने से प्रस्तुत हो जाती है कि आप मेरे साथ जो करना चाहते हैं, कीजिये | मैं मना नहीं करुँगी | किन्तु मुझे मारिये मत | मैं जीना चाहती हूँ | इसके विपरीत अगनी की महुआ अपने को बचाने की कोशीश में ही मृत्यु को प्राप्त हो जाती है | उच्च और निम्न वर्ग की यह मानसिकता आज के जीवन का वास्तव है | मूल्यों की स्वीकृति, मान्यता कितनी अलग !!

दूसरी और अगनी भी सब संभव होने पर भी लड़की के साथ बलात्कार नहीं करता, न हत्या करता है | एक ओर उच्चवर्ग के पिता-पुत्री दूसरी ओर निम्नवर्ग के पिता-पुत्री है | विचारों में,मान्यताओं में,चरित्र में कितनी भिन्नता ?! प्रधान सबूत के आभाव में निर्दोष करार दिया जाता है, जबकि अगनी को लम्बी जेल की सजा होती है | "कहते हैं कि दुर्बल पर सबल का अत्याचार सृष्टि का नियम है | दुर्बलों को ग्रसकर सबलों का टिके रहना जाने किस अनादिकाल से चला आ रहा है | बड़ी मछली का छोटी मछली को खा जाना क्या बड़ी मछली का अपराध माना जायेगा ? पर दुर्बल सबल पर कहाँ कोई अत्याचार करता है | छोटी मछली का इतना बड़ा मुंह कहाँ कि वह बड़ी मछली को निगल जाए ? क्या कभी सुना है कि बाघ को हिरन ने खा लिया ? (३)

आज की सटीक वास्तविकता ! क्या शहर , क्या गाँव | यह छोटी- बड़ी मछली वाला जंगल राज हर जगह चल रहा है और सुनिए प्रधान बीरबर का बयान जो वह कोर्ट में देता है –"मैं गांधीवादी,विनोबापंथी, धर्मपरायण समाज सेवक हूँ | पिछड़े वर्ग, महिलाओं के उत्थान के लिए स्थापित स्वयम सेवी संस्था 'सबला' का संस्थापक और अध्यक्ष हूँ | (४)

गरीब आदमी की अमीर सोच का उदाहरण है अगनी | " अगनी को जेल भोगने का कोई अफ़सोस नहीं था क्योंकि उसके जैसे सेंकडों अगनी अपनी बेगुनाही साबित न कर पाकर सजा काट रहे हैं | रोजाना सेंकडों महुवा पाशविकता का शिकार बन रही हैं | सेंकडों मालिक अग्रिम जमानत लेकर समाज के जंगली रास्तों पर सरेआम घूम रहें हैं | अगनी को लगता है कि वह मालिक की तरह 'बाघ' बनने गया था पर बाघ मांसाहारी होता है, शाकाहारी नहीं | चौदह साल जेलवास के बाद उसे लगता है कि उसके अन्दर का झूठा बाघ मरकर खाक हो गया था | सच्चे बाघ मारते हैं, झूठे बाघ मरते हैं | यही प्रकृति का नियम है | (५)
यह सच्चाई अब इतनी सार्वजनिक, सर्वविदित है कि लोगों को ऐसी पाशवी घटनाओं को सुनने-देखने का कोई आश्चर्य ही नहीं |

'एंटिक' कहानी आधुनिक कहे जाने वाले वर्तमान जीवन की करुणता की कहानी है | ममता कालिया के उपन्यास 'दौड़' के वर्ण्य विषय के समान ही है | संतान पढ़-लिखकर अपने-अपने पड़ावों पर पहुँच जाती हैं | अपने बच्चे परिवार के साथ बड़े शहरों में, विदेशों में स्थायी हो जाते हैं | वैश्विकीकारण और भुमंडलीकरण के बाद यह नई जीवनशैली उत्पन्न हुई है | इस दौड़ में माता-पिता पीछे छूट जाते हैं | अकेले, उदास और असहाय हो जाते हैं | विदेशों में बसे बच्चों-बहुओं को पुराने घर की पुरानी चीजों के साथ-साथ पुराने माता-पिता(बुढऊ-बुढिया) भी 'एंटिक' लगते हैं किन्तु घर की बाकी एंटिक चीजों के साथ माँ-बाप को अपने साथ अपने घर नहीं ले जाते | बुढिया ने बुढऊ से पूछा – " पुरानी चीजों से यदि इतना ही लगाव है तो हमें भी क्यों नहीं लिवा ले जाते अपने साथ ? हम भी एंटिक या फेंटिक कुछ तो हैं | (६) लेखिका ने संग्रह की भूमिका में लिखा है –" भोगवादी समाज के आत्मस्वार्थ, आत्मश्लाघा और आत्मप्रचार के यज्ञकुंड में भारतीय संयुक्त परिवार के रिश्तों का मूल्यबोध प्राचीन वस्तु को एंटिक में बदलकर सभ्य इन्सान उपभोक्ता में बदल जाता है और सौ साल उम्र के बुजुर्गों को एंटिक में बदलकर उनकी तस्वीरों को विदेशी बाज़ार में बेचते समय उनको सुनसान घर में अकेले, नि:सहाय मरने के लिए छोड़ देता है | (७)

'गांधीजी ने कहा था' कहानी गांधीजी में श्रध्दा रखने वाले की करुण परिणति को दर्शाती है | गांधीजी से प्रेरित होकर आज़ादी के लिए अपने जीवन को न्यौछावर करने वाले नि:स्वार्थ, देश-प्रेमी युवाओं की आज़ादी के बाद हुई दुर्दशा की करुणता दर्शाने वाली कहानी है |

गनपत इस कहानी का मुख्य पात्र है | उसकी बूढी माँ है | देश में आज़ादी की स्वर्ण-जयंती मनाई जा रही है | स्वाधिनता की लड़ाई में एक आँख और एक पैर खोकर अपाहिज होनेवाले गनपत को स्वतंत्रता सेनानी की पहचान भी नहीं मिली है | दारुण गरीबी में वह जी रहा है | अपाहिज होने से सुन्दर कन्या से हुई सगाई भी उस वक्त टूट गयी थी | अधेड़ उम्र का होने पर एक गूंगी स्त्री से शादी हो पाती है किन्तु वह बेटी को जन्म देती है, इससे माँ नाराज है क्योंकि इससे वंश आगे नहीं बढ़ सकता | गांधीजी के विचारों से प्रेरित गनपत अपनी बेटी को पढ़ा-लिखाकर खूब आगे बढ़ाना चाहता है |

कॉलेज गाँव से दूर है | पैसा नहीं है | गनपत की बेटी मशाल साईकिल लेकर शहर पढने जाती है | आये दिन लड़कियों के साथ दुर्व्यवहार, बलात्कार, हत्या जैसी वारदातें होती रहती हैं | इसलिए गनपत भी डर रहा है | मशाल सुन्दर, साहसी और महेनती लडकी है | मशाल के साथ भी वही होता है, जो देश की कई लडकियों के साथ हो रहा है | श्याम को कॉलेज से लौट रही मशाल के साथ सामूहिक बलात्कार होता है और बाद में उसकी हत्या कर दी जाती है | पुलिस भी गनपत को ही दोषी मानकर उसे अपमानित और

प्रताड़ित करती है –“ लड़की को साईकिल देकर किसने भेजा था राजधानी की सड़कों पर ?” लड़की के शव की शिनाख्त करने आया गनपत बूत बनकर खड़ा है | स्वर्ण-जयंती समारोह की ध्वनियाँ बहकर आ रही थीं | .....रघुपति राघव राजा राम, सब को सन्मति दे भगवान ...”

मोहन राकेश की कहानी ‘परमात्मा का कुत्ता’ का स्मरण होता है | उसका नायक कहता है –“ मुझे जाकर इनसे पूछने दो कि क्या इसीलिए महात्मा गाँधी ने इन्हें आज़ादी दिलाई थी कि ये आज़ादी के साथ ऐसा सलूक करें, उसकी मिट्टी ख़राब करें ? उसके नाम पर कलंक लगाये ?

कहानी-संग्रह की भूमिका में लेखिका ने लिखा है –“ जीवन की तरह साहित्य में भी एक सूक्ष्म विरोधाभास होता है जिसे पाश्चात्य पंडितों की भाषा में ‘आइरनी’ या ‘श्लेष’ कहा जाता है | देश की आज़ादी के बाद की एक करुण वास्तविकता की कहानी है –‘गांधीजी ने कहा था’ | नारी स्वाधिनता और नारी सशक्तिकरण सिर्फ एक राजनीतिक छलावा है | कहानी का अन्तःस्वर यह सवाल उठाता है कि क्या वास्तव में हमारे देश को आज़ादी मिली है ? जिसकी स्वर्णजयंती के अवसर पर पुरे देश में जश्न मनाया जा रहा है | यह कहानी हमारे रोज़मर्रा के जीवन में घटने वाली एक वास्तविक घटना है | (८)

‘निरुत्तर’ कहानी आज की स्व-केंद्री जीवन शैली को दर्शाती है | राघव बाबू नामक एक उच्च अधिकारी और सीधे-सादे गृहस्थ हैं | बच्चे पढ़-लिखकर बहार स्थायी हो गए हैं | एक दिन अचानक उनका फोन बज उठता है जो कि पुलिस स्टेशन से है | किसी युवक की लाश की शिनाख्त के लिए उन्हें बुलाये जाते है | उस युवक की जेब से राघव बाबू का पता निकला है | फँस जाने के डर से वे नहीं जाते | वह बेरोजगार युवक उनके गाँव से था | किसीने उन्हें नौकरी के सिलसिले में राघव बाबू को मिलने के लिए कहा था और उनका पता लिखकर दिया था | लेखिका के अनुसार –“निरुत्तर’ कहानी मनोवैज्ञानिक विषय पर आधारित है | कहानी का नायक-नायिका व्यक्तिकेन्द्रित समाज का प्रतिनिधित्व करते हैं | आत्मस्वार्थ के सामने सामाजिक अंगीकारबध्धता की बलि चढ़ती है | अपनी परिधि के बहार चाहे जो घटे, उसमे निरुत्तर रहना ही आज की इस स्वार्थ-भरी दुनिया में श्रेयस्कर है | लेकिन मनुष्य की ऐसी निरुत्तरता जो नीरव आत्मदहन में उसे अन्दर ही अंदर जलाती है, उसे वो खुद समझने पर भी शब्दों में अभिव्यक्त नहीं कर पाता | रोज़मर्रा के जीवन में घटने वाली यह भी एक घटना है | इसमें कोई वैचित्र्य नहीं | आज के जीवन में स्नेह, प्रेम, सहानुभूति और दूसरों के प्रति सम्मान कैसे खोखले और मूल्यहीन हैं, उसका स्पष्ट चित्र हम ‘निरुत्तर’ कहानी में देखते हैं |(९)

'रेमो' नामक कहानी में 'बंडा' जाती के आदिवासीयों की कहानी है | उनकी जीवन-शैली, खान-पान, रहन-सहन, मान्यताएं आदि का वर्णन है | ये बिलकुल आदिम सभ्यता वाले लोग हैं | ये लोग स्त्री और पुरुष वस्त्र नहीं पहनते | प्रत्येक पुरुष के पास चार हथियार अवश्य रहते हैं | मेधा नाम की एक पत्रकार बंडाओं के बारे में जानने के लिए उनके बीच जाती है | उनके गाँव तक पहुचने का कोई मार्ग नहीं | मेधा भयंकर जंगलों से पैदल ही पहाड़ चढकर जाती है | जान की परवाह किए बिना वह उनपर लिखने की जिज्ञासा में आ जाती है उनके बीच | बंडाओं के बीच रहकर कार्य कर रहे लीडर बाबू के सहयोग से वह इनके बीच रह पाती है | हमारे तथाकथित सभ्य समाज की मानसिकता लिए मेधा बंडा गाँव में फँस जाती है | रात्रि के समय घने जंगल में अकेली मेधा डर रही है | उसके साथ तीन चार बंडा मर्द हैं | ये ऐसे मर्द हैं जो शराब पीए हुए हैं | शिकार, लूंट, हत्याए कर चूके हैं | घनी रात और जंगल में बिजली कडकती है और मंगल मेधा का हाथ कसकर पकड़कर उसे जंगल में खींच लेता है | मंगल के अन्य साथी भी हैं | हथियारों से लैस इन आदिमों से मेधा भयभीत होती है | उसे लगता है कि यह लोग जरुर उसके साथ दुष्कर्म करेंगे और बाद में हत्या कर देंगे | इससे अच्छा है कि वह भागकर किसी हिंसक पशु द्वारा मार दी जाय या पहाड़ों की खाई में गिरकर मर जाए | वह भागती है पर थोड़ी ही दूर उस अँधेरे में बाघ दिखता है | वह घबरा जाती है | दोनों ओर से हडबडाई वह भागने की कोशीश में खाई में फिसलती है | चोट लगती है | वे सब बंडा मर्द उसे बचाते है पर वह बेहोश हो जाती है | होश आने पर लीडर बाबू मेधा को जो कहते हैं, वही कहानी का कथ्य है ---" अपना शक्की शहरी मन लिए यहाँ आकर आपने इस आदिम बंडा पर्वत की पवित्रता को भंग की है | यहाँ आने से पहले आपको यह जान लेना चाहिए था कि बंडा पर्वत के इतिहास में बलात्कार, जोर-जबरदस्ती एवं पाशविक अत्याचार से कलंकित अध्याय कभी लिपिबध्द नहीं हुआ है | इसके आलावा बंडा पुरुष ने नारी जाती पर कभी भी अस्त्र नहीं चलाया है | बंडा पुरुष ने जब कभी भी खून किया है, पुरुष का ही किया है | नारी बंडा पुरुष की आराध्या है, उसके घर की पूरी कर्ता-धर्ता है, उसकी संस्कृति की बहती धरा है | बंडा पुरुष ने जब भी किसी नारी को चाहा है, उसकी अनुमति से ही उसे वधू बनाकर लाया है | बलात्कार करके नारी-शरीर को भोगने का उदाहरन बंडा पर्वत में नहीं है | भगवान करे, ऐसा कभी न हो | कम से कम धरती पर यह थोड़ी-सी जगह तो पवित्र धरती के रूप में बनी रहे | हमने एक कहानी की चर्चा आगे की है –जिसका शीर्षक है 'गांधीजी ने कहा था' | उस कहानी में हमारे सभ्य समाज की एक जघन्य पाशविकता की बात है | वहाँ इसी प्रकार की परिस्थिति में मशाल नामक लड़की के साथ सामूहिक बलात्कार होता है फिर उसकी हत्या कर दी जाती है; जबकि यहाँ जिन्हें हम असभ्य, अशिक्षित,जंगली, पाशवी और हत्यारे कहते हैं वह भी पुरुष है किन्तु उनकी मानसिकता कितनी पवित्र है | स्त्रियों के प्रति

इनके विचार कितने अच्छे हैं | मन में स्वाभाविक तुलना होने लगती है – सभ्य कौन हैं और कौन जंगली है ?

कहानी का शीर्षक है 'रेमो' | लेखिका लिखती है – जाते हुए मंगल ने पीछे मुडकर पूछा, "फिर कभी मुदलीपाड़ा आएँगी कि नहीं, मईतर (मित्र) ?" " जरुर आउंगी |" मेधा ने कहा | उसकी आँखें भर आयीं | लौटते समय मेधा ने अपनी नोटबुक में एक वाक्य और जोडा, " बंडा खुद को 'रेमो' कहता है, जिसका अर्थ है – मनुष्य |" (१०) कहानी में बंडा लोगों की भाषा एवं शब्द-प्रयोग उसे रसप्रद बनाते हैं |

'रेमो' कहानी के लिए लेखिका के विचार इस प्रकार हैं--- " पृथ्वी के अन्दर दूसरी तरफ एक पृथ्वी की कहानी है – 'रेमो' | इक्कीसवीं सदी में इन्सान जब विज्ञान और प्रौद्योगिकी विद्या के चरम उत्कर्ष पर पहुंचकर एक नए सौरमंडल की खोज में दृढ संकल्पबध्द है तब रेमो(इन्सान) खुद को धरती का पहला इन्सान घोषित कर एक पहाड़ के उपर मनुष्यता का झंडा लहरा रहा है | शहरी सभ्य इन्सान उसे तिरछी नजर से देखकर मुँह फेरते समय रेमो मानवता के दिव्य गुणों से उसके ह्रदय को स्पंदित करता है |" (११)

ये और ऐसी अन्य कहनियाँ हमें जीवन के वास्तव से न केवल रूबरू कराती हैं , बल्कि हमें यह सोचने पर मझबुर करती हैं कि आखिर इन संवेदनाओं और आयामों को हम कैसे सुलझा सकतें हैं | साहित्य की सार्थकता की एक बड़ी पहचान यह है कि वह समाज के, लोगों के सरोकारों से जुड़े, जूझे और विपन्न, असहाय लोगों के बारे में सोचे, समझे और कुछ करें | इन कहानियों से गुजरकर पाठक संवेदना के इन आयामों से जरुर रूबरू होता है | एक पाठक के रूप में मुझे लगता है कि यही इन कहानियों की सार्थकता है, उपलब्धि है, प्रासंगिकता है |

सन्दर्भ सूचि :

१. 'मेरी प्रिय कहानियाँ' -- पृष्ठ नंबर ०८
लेखिका : प्रतिभा राय |
(अनुवाद : डॉ.राजेन्द्र प्रसाद मिश्र)
प्रकाशक : राजपाल एण्ड सन्ज
१५९०, मदरसा रोड, कश्मीरी गेट,
नई दिल्ली – ११०००६

२. वही – पृष्ठ नंबर ३५
३. वही-- पृष्ठ नंबर ३८
४. वही-- पृष्ठ नंबर ३९
५. वही-- पृष्ठ नंबर ४४
६. वही-- पृष्ठ नंबर ५६
७. वही-- पृष्ठ नंबर ०९
८. वही-- पृष्ठ नंबर ०९
९. वही-- पृष्ठ नंबर १०
१०. वही-- पृष्ठ नंबर ७९
११. वही-- पृष्ठ नंबर १०